केन्द्र प्रायोजित एक्सटेंशन रिफोर्म्स परियोजना के अधीन प्रकाशित
प्रसार पुस्तिका : 04/2010

झारखण्ड सरकार

बकरी पालन की प्रौद्योगिकी

गरीबी से अमीरी की ओर
बकरी पालन चारों ओर !

कृषि प्रोद्यौगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), लातेहार
अनुमंडल कृषि प्रक्षेत्र, लातेहार
दूरभाष : 06565-248074
फैक्स : 06565-248374

बकरी पालन : एक ग्रामीण व्यवसाय

बकरी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और इससे प्राप्त होने वाली वस्तुएँ मांस, दूध, बाल, चमड़े, जैविक खाद इत्यादि में सभी प्रकार के लाभदायक है। इसके पालन–पोषण में थोड़ी सी सावधानी एवं जानकारी से अधिक से अधिक लाभ मिलता है।

अच्छी नस्ल की मांसवाली या दूधवाली या दोनों प्रकार की बकरी देशी या संकर का चुनाव प्रजनन के लिए किया जाना चाहिए। संकर नस्ल की बकरी कुछ ज्यादा लाभ देती है।

बकरी पालन से संबंधित आवश्यक बातें

नस्ल का चुनाव

भारतीय बकरियों की उपयोगी नस्लें

1. ब्लैक बंगाल 2. मारबारी 3. जमुनापारी 4. मालावार 5. बारबरी 6. संगमनेरी 7. बीटल 8. जाकरना 9 सिरोही 10. कश्मीरी

विदेशी बकरियों की प्रमुख नस्लें

1. अल्पाइन 2. सानन 3. एंग्लोनुवियन 4. टोगेनवर्ग

- नस्ल का चुनाव किसान की आवश्यकता के अनुसार किया जाना चाहिए।
- भारतीय स्थिति में ब्लैक बंगाल बकरी का प्रजनन बीटल नस्ल के बकरों से करावें।
- बीटल नस्ल से उत्पन्न संकर पाठी या बकरी का प्रजनन संकर बकरा से करावें।
- बकरा और बकरी के बीच नजदीकी संबंध नहीं होना चाहिए।
- बकरा और बकरी को अलग–अलग रखना चाहिए।

पाल दिलाने का उचित समय : गर्म होने के 20–30 घंटे के अन्दर ही प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से गर्भाधान करायें। अधिक जाड़ा या अधिक गर्मी के मौसम में पाल न दिलवायें।

बच्चा पैदा होने का उचित समय : लगभग 145–150 दिनों के गर्भाधान के बाद बच्चों का जन्म होता है। अतः पाल दिलाते समय यह ध्यान देने चाहिए कि बच्चे अधिक जाड़े या गर्मी के मौसम में पैदा नहीं हों।

गाभिन बकरी की देखभाल : बकरियों को सुबह 8 बजे से 11 बजे तथा शाम 3 बजे से 5 बजे तक चराना चाहिए। दोपहर के समय में अधिक धूप–गर्मी से बचाना चाहिए। सुबह या शाम को 200–250 ग्राम दाना प्रति बकरी देना चाहिए।

पीने का पानी : स्वच्छ जल पूरी मात्रा में मिलना चाहिए।

बकरी का दूध : यह दूध अति सुपाच्य है और मनुष्य के छोटे बच्चों के लिए अत्यधिक लाभकारी है। इसके सूक्ष्म पोषक तत्व जल्दी ही पच जाते हैं। इसमें शरीर पोषण की अधिक क्षमता है, जो माता के दूध के समतुल्य है तथा इसमें रोग–निरोधक गुण भी मौजूद है।

बकरी और बच्चों का प्रबंधन

- पाठी का प्रथम प्रजनन 8 से 12 माह की उम्र के बाद ही करावें।
- पाठी अथवा बकरियों को गर्म होने के 10 से 12 एवं 24 से 26 घंटों के बीच दो बार पाल दिलावें।
- गाभिन बकरियों को गर्भावस्था के अन्तिम डेढ़ महीने में चराने के अतिरिक्त कम से कम 200 ग्राम दाना का मिश्रण अवश्य दें।
- जन्म के उपरान्त नाभि को 3 ईंच नीचे से नये ब्लेड की मदद से काटें तथा डेटाल या टिंचर आयोडिन या बोकाडिन लगा दें। यह दवा 2 से 3 दिनों तक लगावें।

- जन्म के बाद बच्चों की नाक को अच्छी तरह साफ करें एवं बच्चों को माँ का प्रथम दूध (कोलेस्ट्रम) जन्म के 20 मिनट के अंदर पिलावें।
- बच्चा देने के 30 दिनों के बाद ही गर्म होने पर बकरी को पाल दिलावें।
- नर बच्चों का बंध्याकरण 2 माह की उम्र में करावें।
- पाठा (खस्सी) और पाठी की बिक्री 9 से 10 माह की उम्र में करनी चाहिए।

बकरियो का आवास

- बकरी के आवास को साफ सुथरा एवं हवादार रखा जाय।
- बकरियों के आवास में प्रति बकरी 10 से 12 वर्गफीट की जगह दें तथा एक घर में एक साथ 20 बकरियों से ज्यादा नहीं रखें।
- अगर संभव हो तो घर के अंदर मचान पर बकरी और उस के बच्चों को रखें।

बकरियों में बीमारी प्रबंधन

- बकरी के बच्चों को समय–समय पर टेट्रासाइक्लिन दवा पानी में मिलाकर पिलावें जिससे न्यूमोनिया का प्रकोप न हो।
- बकरी तथा इनके बच्चों को नियमित रूप से कृषि नाशक दवा दें।
- तीन माह से अधिक उम्र के प्रत्येक बच्चे एवं बकरियों को इन्टेरोटोक्सिमिया का टीका अवश्य लगवायें।
- बकरी के बच्चों को कोकसोडिओसीस के प्रकोप से बचाने की दवा डाक्टर की सलाह से दें।
- बीमार बकरी का उपचार डाक्टर की सलाह लेकर करें।

- बकरियों को प्लेग (पी०पी०आर०) बीमारी से बचाने के लिए चार माह की उम्र पर पी०पी०आर० का टीका लगवाएँ।

छोटे बच्चों को जन्म के बाद से ही फेन्सा देते रहना चाहिए। इसमें पोषण के अलावा रोग निरोधक शक्ति भी है। छोटे बच्चों को ठंडक से बचाना चाहिए। समय–समय पर परजीवी से बचाव के लिए दवा पिलानी चाहिए। समय–समय पर पैखाना जाँच कराकर उचित कृमिनाशक दवाई दें। आवश्यकता पड़ने पर पशुचिकित्सक से सलाह लें।

बीस वयस्क बकरियों से आय-व्यय का ब्यौरा

1. पूंजी लागत

(क) पशुओं की कीमत

(i)	20 व्यस्क बकरियों का क्रय मूल्य (800 रु०/बकरी की दर से)	16000.00
(ii)	1 वयस्क उन्नत नस्ल के बकरे का क्रय मूल्य (1200रु०/बकरा की दर से)	1200.00
(ख)	आवास बनाने पर खर्च (20 वर्गफुट/बकरा, 10 वर्गफुट/बकरी एवं 4 वर्गफुट/छौना) 40 रु०/वर्गफुट की दर से	13600.00
(ग)	वर्त्तन, चेन आदि पर खर्च	1000.00
	कुल पुंजी लागत –	31800.00

2. स्थायी लागत में अवमूल्यन

(क)	पशुधन मूल्य में ह्रास (अवमूल्यन दर 15 प्रतिशत)	2580.00
(ख)	शेड लागत मूल्य में ह्रास (अवमूल्यन दर 7 प्रतिशत)	952.00
(ग)	वर्त्तन मूल्य में मूल्य ह्रास (अवमूल्यन दर 15 प्रतिशत)	150.00
	कुल –	3682.00

3. आवर्ती खर्च

(क) बकरी पालन प्राकृतिक चारा एवं चराने पर निर्भर रहेगा। वर्ष के 2–3 महीनों में चारा की कमी होने पर दाना मिश्रण देना होगा।

(ख) 2½ महीनों में दाना मिश्रण पर खर्च :
बकरी के लिए 150 ग्राम/बकरी/दिन (2.25 क्विंटल)
बकरा के लिए 300 ग्राम/बकरा/दिन (22.5 कि.ग्रा.),
मेमनों के लिए 100 ग्राम/मेमना/दिन (2.25 क्विंटल)
कुल 4.73 क्विंटल @ 600रु०/क्विंटल की दर से – 2838.00

(ग) दवा इत्यादि पर सलाना खर्च 2000.00

कुल – 4538.00

4. कुल खर्च = आवर्ती खर्च + स्थाई लागत में अवमूल्यन = 4538+3682 = 8220.00

5. आमदनी

(क) 30 वयस्क मेमनों के विक्रय से प्राप्त आय 800 रु०/मेमना 24000.00

(ख) खाद की बिक्री 2500.00

कुल = 26500.00

6. शुद्ध आमदनी = कुल आमदनी–कुल खर्च
26500–8220 = 18280.00

7. शुद्ध आमदनी प्रति बकरी/वर्ष = 914.00

लेखक : **आलोक कुमार पाण्डेय**
पौधा प्रजनन एवं अनुवांशिकी विभाग, बी.ए.यू., काँके, राँची

संरक्षक : **श्री राहुल पुरवार** भा.प्र.से.
उपायुक्त एवं अध्यक्ष (आत्मा), लातेहार

उप संरक्षक : **श्री सुधान्शु भूषण राम,** भा.प्र.से.
उपविकास आयुक्त–सह–उपाध्यक्ष(आत्मा),लातेहार

मुख्य संपादक एवं प्रकाशक : **श्री उमेश प्रसाद,** झा.कृ.से.
परियोजना निदेशक, आत्मा, लातेहार

वरिष्ठ संपादक : **श्री अजय कुमार**
मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, बी.ए.यू., राँची

2724/11/09 • Kailash Paper • Ph.: 0651-2532251